शुन्ध् 1. et 10. *P. A. in dial. Vêd.* 1. et 10. *P.* purificare. 1. *A.* purificari. (Cf. शुध् et v. Westerg.)

1. शुभ् 1. *A. interdum P.* splendere. N. 16. 19.: एषा हि रहिता तेन शोभमाना न शोभते; In. 5. 12.: गूढगुल्फधरौ पादौ … शोभेते किङ्किणीकिनौ; Mah. 1. 7137.: त्वयै 'व शोभिष्यति राजपुत्री; 4. 498.: शुशुभे वदनन् तस्या रुदन्त्याः. — *Caus.* 1) facere ut quid splendeat, collustrare. In. 2. 27.: शोभयाञ्चक्रतुः सभां सूर्यचन्द्रमसौ व्योम … इव. 2) ornare. N. 25. 6.: अशोभयन्त नगरम्; In. 5. 9. 10. (Vid. शुम्भ्, सुम्भ्, सिम्भ् et cf. शुध्; gr. κομψός, κομ-μός, κομέω; germ. vet. *sûbar* purus, v. शुभ्र; lith. *z'ibbu* luceo, nisi pertinet ad दीप्.)

c. उप *Caus.* ornare. In. 2. 1. N. 12. 40.

c. वि splendere. Hit. 55. 22.

2. शुभ् 6. *P.* splendere.

शुभ (r. शुभ् s. अ) 1) nitidus, pulcher. In. 2. 24. 5. 39. 54. H. 4. 32. 2) faustus. N. 5. 1. Bh. 2. 57. (Pers. خوب *kûb* pulcher, vid. शुभ्र.)

शुभ्र (r. शुभ् s. र) 1) splendidus. In. 5. 10. 2) albus. Am. (Germ. vet. *sûbar* purus, nostrum *sauber*, anglo-sax. *syfr.*)

शुम्भ् 6. *P.* lucere, splendere. (*Vid.* शुभ्.)

शुल्क् 10. *P.* (भाषणे *K.* सर्जने वर्जने भाषे *V.*) loqui, dimittere, creare, relinquere. *Cf.* श्वल्क्.

शुल्क *m. n.* (r. शुल्क् s. अ) vectigal. Am.

शुल्व् 10. *P.* (सर्जने *K.* माने सर्गे *V.*) dimittere, creare, metiri.

शुल्व *n.* cuprum. Am.

शुल्वारि *m.* sulphur. Hem. (Cf. lat. *sulphur.*)

शुश्रूष् *DESID.* rad. श्रु audire.

शुश्रूषा *f.* (a praec. s. आ) obedientia. In. 4. 9.

शुश्रूषु (a शुश्रूष् q. v. s. उ) obediens.

शुष् 4. *P.* arescere, siccari. A. 8. 8.: अस्त्रं विशोषणम् … प्राहिणवङ् घोरम् अशुष्यत् तेन वै जलम्; Dr. 6. 11.: किन् ते मुखं शुष्यति; Mah. 3. 591.: शुष्येत् तोयनिधिः. *Etiam A.* R. Schl. II. 96. 34.: शुष्यमाणान्. — *Caus.* siccare. Bh. 2. 23.: नचै 'नङ् क्लेदयन्त्य् आपो न शोषयति मारुतः; A. 8. 9. (शुष् non e कुष् - v. p. 340. - sed e सुष् ortum esse videtur, quâ formâ nituntur zend. 𐬵𐬎𐬱𐬐𐬀 *husˊka* siccus, v. शुष्क, slav. *sûch* siccus, v. gr. comp. *255. m.*, lith. *sáusa-s* id., gr. σαυσαρός, σαυσαρισμός, lat. *siccus* per assim. e *sis-cus* = शुष्क q. v.; hib. *seacadh* «parched, dried, frozen, hard», *seacaighim* «I parch, dry, freeze», *sioc* «frost», *sican* id.)

c. उत् *Caus.* exsiccare. R. Schl. II. 64. 65.: शोक उच्छोषयति प्राणान् वारिस्तोकम् इवा ”तपः.

c. उप *Caus. id.* Mah. 1. 4624.

c. परि *i. q. simpl.* Bh. 1. 29.

c. वि *Caus.* siccare. Mah. 1. 1336. 3. 10767.

c. सम् *A.* siccari. Mah. 1. 8230.: धाराः … खे समशुष्यन्त. — *Caus.* siccare. Ragh. 6. 36.

शुष्क (r. शुष् s. क) siccus, exsiccatus. N. 16. 14. (Lat. *siccus*, v. शुष्.)

शुष्म (r. शुष् s. म) *Masc.* 1) sol. 2) ignis. 3) aër, ventus. *Neut.* 1) lumen, splendor. 2) vis, robur.

शुष्मन् *m.* (r. शुष् s. मन्) ignis. Am.

शुष्मिन् (a शुष्म s. इन्) fortis, robustus. H. 1. 13.

शूकर *m.* (e शू, a sono dictum, et कर faciens) sus, porcus. (Cf. lat. *sus*, gr. σῦς, ὗς, germ. vet. *sû*, nostrum *Sau.*)

शूद्र *m.* vir quarti Indorum ordinis, qui opifices comprehendit. Br. 2. 16. Bh. 9. 32.

शून *part. pass.* r. श्वि.

शून्य inanis, vacuus. Su. 2. 18. (Cf. gr. κενός, κενεός; fortasse aeol. κέννος per assimil. e κένjος sicut prâcr. अण्ण, gr. ἄλλος ex अण्य, ἄλjος = अन्य q. v.)

1. शूर् 4. *A.* (स्तम्भे *K.* स्तम्भहिंसे *V.*) firmum, immobilem esse, ferire, occidere, laedere.

2. शूर् 10. *A.* (विक्रान्तौ *K.* विक्रमे *V.*; fortasse Denom. a sq.) fortem esse, fortitudine praeditum esse.

शूर *m.* (ut mihi videtur, a r. श्वि crescere q. v. correpto वि in ऊ, suff. र, sicut goth. *mag* possum, *mah-ts* potestas